बोचासणवासी श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण संस्था

सत्संग शिक्षण परीक्षा (सत्संग परिचय : प्रश्नपत्र - २ - पूर्व कसौटी - १९ जून, २०१६)

☞ परीक्षार्थीओं को महत्वपूर्ण सूचनाएँ ☜

१. परीक्षार्थी सत्संग प्रारंभ से प्राज्ञ - ३ तक की क्रमशः हर परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद ही अगली परीक्षा दे सकते हैं ।

२. सत्संग शिक्षण परीक्षा के मुख्य दिन परीक्षार्थी के नामलिखित मुख्य पृष्ठ परीक्षा कार्यालय द्वारा प्रिन्ट करके भेजा जाता है । उसके अनुसार ही परीक्षार्थी को परीक्षा की श्रेणी (प्रारंभ, प्रवेश, परिचय आदि...) एवं माध्यम (गुजराती, हिन्दी, English)में परीक्षा देनी होंगी । **इसमें किसी प्रकार का परिवर्तन करके दी गई परीक्षा मान्य नही होगी ।**

३. परीक्षार्थी को पूर्वकसौटी के प्रश्नपत्र की श्रेणी (प्रारंभ, परिचय, प्राज्ञ-१, केवल प्रथम.....) एवं परीक्षा के माध्यम (गुजराती, हिन्दी, English) अनुसार ही मुख्य परीक्षा देनी होगी । पूर्वकसौटी की जानकारी के अनुसार परीक्षा केन्द्र के मुख्य परीक्षा कार्यकर्ता को अंतिमसूची (Final List) भेजी जाती है, उसके अनुसार ही मुख्य परीक्षा के दिन परीक्षा देनी होगी । **अंतिमसूची से अलग दिये गए विवरणवाली परीक्षा रद्द मानी जाएगी और एसी उत्तर पुस्तिका का मूल्यांकन नहीं किया जाएगा ।**

४. मुख्य परीक्षा के दिन परीक्षा खंड में उपस्थित हर एक परीक्षार्थी अपनी नामलिखित उत्तर पुस्तिका लेकर तथा उसमें मांगा गया अन्य विवरण (जन्म दिनांक, शिक्षा) लिखकर वर्ग निरीक्षक के हस्ताक्षर अवश्य करवा लें । **वर्ग निरीक्षक के हस्ताक्षर बिना लिखी गई उत्तर पुस्तिका रद्द (केन्सल) मानी जाएगी और उसका मूल्यांकन भी नहीं किया जाएगा ।**

५. परीक्षार्थी केवल ब्लू या काली स्याही वाली पेन से ही उत्तर पुस्तिका में उत्तर लिखें । पेन्सिल अथवा लाल, हरी या अन्य स्याही से लिखे गए उत्तर या एक से ज्यादा स्याही से **लिखी गई उत्तर पुस्तिका मान्य नहीं होगी ।**

६. सूचनानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए । काटकूट किए हुए उत्तर मान्य नहीं होंगे । अस्पष्ट और पढ़ा न जा सके, ऐसे उत्तर मान्य नहीं होंगे । **एक से ज्यादा प्रकार के अक्षरों की लिखावटवाली उत्तर पुस्तिका रद्द (केन्सल) मानी जाएगी और उसका मूल्यांकन भी नहीं किया जाएगा ।**

७. **परीक्षा खंड के बाहर** अथवा अन्य सभी परीक्षार्थीओं से अलग या परीक्षा के नियमों का उल्लंघन कर के दी गई परीक्षा मान्य नहीं होगी ।

८. **सत्संग शिक्षण परीक्षा कार्यालय, अहमदाबाद की पूर्व अनुमति के बिना मूल परीक्षार्थी के बदले 'स्थानापन्न' या 'सबस्टीट्युट राइटर' अथवा 'दूसरे व्यक्ति' द्वारा लिखी गई परीक्षा की उत्तर पुस्तिका रद्द मानी जाएगी ।**

९. **सत्संग शिक्षण परीक्षा कार्यालय, अहमदावाद को पूर्व अवगत किए बिना, रजिस्टर्ड परीक्षा केन्द्र के बदले में अन्य परीक्षा केन्द्र से दी गई परीक्षा रद्द (केन्सल) मानी जाएगी और उसका मूल्यांकन भी नहीं किया जाएगा ।**

१०. सत्संग प्रवेश, परिचय, प्रवीण एवं सत्संग प्राज्ञ (प्राज्ञ के दोनों प्रश्नपत्रों में रजिस्टर्ड हुए) के लिए परीक्षार्थियों को दोनों प्रश्नप्रत्रों की परीक्षा देनी अनिवार्य है । **किसी भी एक ही प्रश्नपत्र की दी गई परीक्षा की उत्तर पुस्तिका का मूल्यांकन नहीं किया जाएगा ।**

११. **मुख्य परीक्षा के दिन उत्तर पुस्तिका के अलावा अतिरिक्त पन्नों में लिखे हुए उत्तरों का मूल्यांकन नहीं किया जाएगा ।**

१२. **परीक्षा-कक्ष में परीक्षा के दौरान** किसी भी परीक्षार्थी को मोबाईल फोन तथा इलेक्ट्रॉनिक साधन जैसे टेब्लेट, लेपटॉप आदि का उपयोग करने तथा उसे अपने पास रखने की अनुमति नहीं है ।

१३. **प्राज्ञ की परीक्षा का फॉर्म भरने से पहले निम्नलिखित मुद्दे ध्यान में रखें ।**

- परीक्षार्थी एक ही साल में दोनो प्रश्नपत्र दे सकता है । अथवा पहले साल में पहला प्रश्नपत्र और दूसरे साल में दूसरा प्रश्नपत्र दे सकता है । **पहले प्रश्नपत्र में उत्तीर्ण (पास) होने के बाद ही दूसरा प्रश्नपत्र दिया जा सकता हैं ।** प्राज्ञ परीक्षा में केवल प्रथम प्रश्नपत्र या दूसरा प्रश्नपत्र देनेवाले को उत्तीर्ण होने के लिए उस प्रश्नपत्र में ४५ अंक प्राप्त करना आवश्यक है ।
- जिस परीक्षार्थी ने प्राज्ञ के दोनो प्रश्नपत्र में रजिस्ट्रेशन कराया हो और यदि वह परीक्षार्थी किसी एक प्रश्नपत्र में ही उपस्थित रहता है और दूसरे प्रश्नपत्र में अनुपस्थित रहता है, **तो एक प्रश्नपत्र की दी गई उत्तर पुस्तिका का मूल्याकंन नहीं किया जाएगा ।** जिस परीक्षार्थी ने प्राज्ञ के दोनों प्रश्नपत्र दिए हों, उसे उत्तीर्ण होने के लिए ९० अंक प्राप्त करने होंगे ।
- प्राज्ञ परीक्षा देने वाले सभी परीक्षार्थी कृपया ध्यान रखें कि जो परीक्षार्थी अलग-अलग साल में प्रश्नपत्र प्रथम और प्रश्नपत्र दूसरा देते हैं, उनको प्रथम प्रश्नपत्र ४५ या उससे ज्यादा अंक से उत्तीर्ण करने के बाद **दूसरा प्रश्नपत्र ज्यादा से ज्यादा एक ही साल के विराम के बाद देना होगा ।** एक से ज्यादा साल की अनुपस्थिति के बाद दिया हुआ दूसरा प्रश्नपत्र स्वीकृत नहीं होगा । **ऐसे परीक्षार्थी को पुनः प्राज्ञ का प्रथम प्रश्नपत्र अथवा दोनों प्रश्नपत्र देने होंगे ।**
- प्राज्ञ परीक्षा के पारितोषिक विजेता की सूची में आनेवाले परीक्षार्थी में से जिन्होंने प्राज्ञ के दोनों प्रश्नपत्र एक साथ एक ही साल में दिया हो, **उनको १० प्रतिशत (फिसदी) अंक पुरस्कार के रुप में दिए जाएगें** और इस तरह परीक्षार्थी पुरस्कार के योग्य माना जाएगा ।
- **नोंध :** जिस परीक्षार्थी ने **भारत की प्रवीण परीक्षा** उत्तीर्ण की हो, ऐसे ही परीक्षार्थी प्राज्ञ-१ परीक्षा दे सकते हैं ।

१४. **अवैद्य रजिस्ट्रेशन !!! परिणाम नहीं मिलेगा !!!**

५०२/३१०

बोचासणवासी श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण संस्था

सत्संग शिक्षण परीक्षा (पूर्व कसौटी - १९ जून, २०१६)

(समय : दोपहर २:०० से ४:१५) **सत्संग परिचय : प्रश्नपत्र -२**

सूचना : प्रश्न के बाद में दिए गए अंक उसी प्रश्न के उत्तर के पृष्ठ क्रम बताते हैं । **कुल गुण : ७५**

विभाग-१ : किशोर सत्संग परिचय - प्रथम आवृत्ति, फरवरी - १९९९

प्र.१ निम्नलिखित कथन कौन, किसको और कब कहता है, यह लिखिए । [९]

१. ''मैं स्वामिनारायण का संत हूँ, हम सदा स्त्री और धन से दूर रहते हैं ।'' (३७)
२. ''यदि खाद्य सामग्री यथेष्ठ नहीं है तो लक्ष्मीजी की निन्दा होगी ।'' (४६)
३. ''दादाखाचर का गुरु हाथ लगा है, इसे बरछी से मारो ।'' (१८)

प्र.२ निम्नलिखित कथनों के बारे में कारण लिखिए । (दो से तीन पंक्ति में) [६]

१. राजबाई की चिता पर अग्नि प्रज्वलित नहीं हुई । (५९)
२. दादाखाचर ने अपना दरबार महाराज को कृष्णार्पण कर दिया । (२८)
३. एकान्तिक संत का मन, कर्म, वाणी से संग करना चाहिए । (४३)

प्र.३ स्वरूपानन्द स्वामी (९१-९४) - **प्रसंग के बारे में १५ पंक्ति में टिप्पणी लिखिए । (वर्णनात्मक)** [५]

प्र.४ निम्नलिखित प्रश्नों के एक (संपूर्ण) वाक्य में उत्तर लिखिए । [५]

१. लीलाचिन्तामणि के पदों की रचना किस ने की है ? (६२)
२. पुतलीबाई क्यों नरक में गई ? (१०१)
३. गोपीनाथजी की मूर्ति नित्य किसको फूलों की माला देती थी ? (१४)
४. परमचैतन्यानन्द स्वामी के साथ गए हुए साधु लौट आने पर श्रीजी महाराज ने क्या कहा ? (७९)
५. गोंडल अक्षर मन्दिर के प्रथम महंत कौन बने ? (३१)

प्र.५ 'अपने अंदर खोज.....' (८७-८८) - **'स्वामी की बात' पूर्ण कीजिए और इसके बारे में निरूपण लिखिए ।** [५]

प्र.६ निम्नलिखित कीर्तन / अष्टक / श्लोक आदि को सूचनानुसार पूर्ण कीजिए । [८]

१. वादी हराव्या ..... सर्वोपरी महाराज (७)
२. गायत्रीथी लक्ष ..... सद्‌बुद्धि जागे । (१५)
३. करुणामय ..... भजे सदा ॥ (३४)
४. आहारनिद्रा ..... पशुभिः समानाः ॥ (९७) - श्लोक का हिन्दी में अनुवाद कीजिए ।

विभाग-२ : प्रागजी भक्त - प्रथम संस्करण, नवम्बर - १९९८

प्र.७ निम्नलिखित कथन कौन, किसको और कब कहता है, यह लिखिए । [९]

१. ''इसकी जड़ें तो पाताल तक चली गई हैं ।'' (२४)
२. ''ज्ञानी के अनन्त नेत्र होते हैं ।'' (३७)
३. ''दूसरों के लिए एक बूंद भी नहीं छोड़ा ।'' (५८)

प्र.८ निम्नलिखित कथनों के बारे में कारण लिखिए । (दो से तीन पंक्ति में) [६]

१. मुमुक्षु को कौए की तरह सोना चाहिए । (४७)
२. प्रागजी भक्त द्वारा गुणातीतानन्द स्वामी सत्संग में प्रकट हैं । (३३)
३. प्रागजी भक्त को शांति का अनुभव हुआ । (६)

प्र.९ निम्नलिखित किन्हीं <u>एक</u> प्रसंग के बारे में १५ पंक्ति में टूंकनोंध लिखिए । (वर्णनात्मक) [५]

१. मुझे स्वामिनारायण ने धारण कर रखा है (३९-४०) २. शिष्य की योग्यता की परीक्षा (१०-११, १३-१४)

प्र.१० निम्नलिखित प्रश्नों के एक (संपूर्ण) वाक्य में उत्तर लिखिए । [५]

१. महाराज ने कमा सेठ को सपने में क्या आदेश दिया ? (२६)
२. अहमदाबाद में प्रागजी भक्त स्वामी के दर्शन पाकर क्या कहते थे ? (३३)
३. प्रागजी भक्त ने संतों को कैसे भोजन करवाया ? (३)
४. पीठवड़ी की सभा में प्रागजी भक्त ने क्या किया ? (३)
५. बड़े बड़े सद्‌गुरुओं क्यों लज्जित हुए ? (३१)

(पृष्ठ पलटिये)

सत्संग शिक्षण परीक्षा कार्यालय - अहमदाबाद द्वारा किये गये पूर्व कसौटी के आयोजन में मैंने स्वयं कक्ष में (बैठक कक्ष में) उपस्थित रहकर **''सत्संग परिचय : प्रश्नपत्र - २''** परीक्षा दी है । निम्नलिखित बातें सही हैं, जो आपको विदित हो ।

परीक्षार्थी का जन्म दिन :- दिनांक ☐☐ महीना ☐☐ साल ☐☐☐☐

परीक्षा दिनांक और परीक्षा का समय :

परीक्षार्थी के हस्ताक्षर :

सूचना : सिर्फ़ उपस्थित परीक्षार्थी भूले बिना इस उपस्थिति स्लीप को काटकर, सभी विगत भरकर केन्द्र व्यवस्थापक को वापस कर दें । सिर्फ़ कक्ष में (बैठक कक्ष में) उपस्थित परीक्षार्थी की उपस्थिति स्लीप इकट्ठा करके सत्संग शिक्षण परीक्षा कार्यालय - अहमदाबाद को जमा करा दे । (अपूर्ण विवरणवाली उपस्थिति स्लीपें मान्य नहीं होंगी ।)

प्र.११ निम्नलिखित विकल्पों में से केवल सही विकल्प के आगे दिए गए खाने में सही (✓) का निशान करें । **[६]**

सूचना : एक या एक से अधिक विकल्प सही हो सकते हैं । सभी सही विकल्प के आगे ही सही का निशान किया होगा तभी पूर्ण गुण दिए जायेंगे, अन्यथा एक भी गुण नहीं दिया जाएगा ।

१. अन्तिम लीला (६१)

(१) ☐ संवत् १९५४ (२) ☐ कार्तिक शुक्ल १३

(३) ☐ मुझे गढ़डा ले चलो (४) ☐ घेला नदी के तट पर अग्नि संस्कार

२. गढ़डा में जल-झीलनी महोत्सव (५३)

(१) ☐ उसके नेत्रों में भगवान के सुख की वर्षा होती हैं ।

(२) ☐ पाँचो इन्द्रियाँ और अन्त:करण जम जाते हैं ।

(३) ☐ भगवान की मूर्ति को छोड़कर इधर-उधर नहीं भटकता ।

(४) ☐ जो अंत:मुखी हो गया वही यह दुर्लभ सुख अनुभव करता हैं ।

३. गोपालानन्द स्वामी अक्षरधाम पधारे (५)

(१) ☐ संवत् १९१९ (२) ☐ संवत् १९०८ (३) ☐ वैशाख कृष्णा चतुर्थी (४) ☐ जेठ कृष्णा चतुर्थी

प्र.१२ निम्नलिखित गलत वाक्य को उसके विषय के अनुलक्ष्य में सही लिखिए । **[६]**

सूचना :- संपूर्ण वाक्य सही लिखा होगा तो ही गुण प्राप्त होंगे । अन्यथा एक भी गुण प्राप्त नहीं होगा ।

उदाहरण : जूनागढ में अपूर्व सम्मान : अमीन हरिभक्त आचार्य जटाशंकर ने अपने शिष्य मणिलाल भट्ट से कहा, ''यह जागा भक्त जैसे चमार खाँट के ऊपर बैठे और आचार्य उसे दण्डवत् करे; ऐसा क्यों हैं ?''

उत्तर : जूनागढ में अपूर्व सम्मान : नागर हरिभक्त **डॉ. उमियाशंकर** ने अपने **गुरु बालमुकुन्ददासजी** से **पूछा, '' प्रागजी भक्त** जैसा **दरजी गद्दी के** ऊपर बैठे और **संत** उसे दण्डवत् करे; ऐसा क्यों हैं ?''

१. **कंटकाकीर्ण मार्ग - विरोध का आरम्भ :** एक बार महाराज बैलगाड़ी से जामनगर से पीपलाणा जा रहे थे । कुछ संतों भी उनके साथ बैलगाड़ी में बैठे थे । (२८)

२. **साक्षात्कार :** साढ़े चार दिन तक प्रागजी भक्त ने धन-मन की पूर्ण आहुति देकर महाराज की सेवा की थी और महाराज ने भी प्रागजी भक्त पर अपनी दिव्य-कृपा की वर्षा कर कृतकृत्य कर दिया था । (२०)

३. **अड़सठ तीर्थ सद्गुरु चरणों में :** एक बार फूलदोल के उत्सव के बाद शामजी कमरे को साफ कर रहे थे । (१६)

४. **सद्गुरु गोपालानन्द स्वामी का संग :** एक बार प्रागजी भक्त दरजी का काम सीखने के लिए गढ़डा गए । बाद में गोपीनाथजी महाराज के लिए सुन्दर पाघ और अंगरखा बनाया । गोपीनाथजी महाराज को पोशाक भेंट करने के लिए सारंगपुर गए । (५)

५. **अहमदाबाद में ज्ञान-यज्ञ :** एकादशी का पालन करने से व्यक्ति के अँगूठे से तेज प्रकाशित होता है, जीव का कल्याण होता है । जब ब्रह्मचारी स्नान करता है और उसकी हथेली से जो बूंदें टपकती हैं, उन्हें पृथ्वी पर गिरने से पूर्व ही देवता लोग ग्रहण कर लेते हैं । संतों के लिए भी एकादशी व्रत का पालन कठिन हैं । (४८)

६. **सत्संग में पुन: प्रवेश :** मोहन भगत जागा स्वामी को अतिशय प्रेम करते थे । अपमान-भावना को दबाकर जेठाभाई से क्षमा माँगी । (३६)

* * *

सूचना : इस प्रश्नपत्र में से कम या ज्यादा मात्रा में प्रश्न दिनांक १० जुलाई, २०१६ के दिन होनेवाली मुख्य परीक्षा में पूछे जाएँगे । मुख्य परीक्षा में उत्तरवही के ईलावा अतिरिक्त पन्नों में लिखें हुए उत्तर मान्य नहीं होंगे । परीक्षा कार्यालय, अहमदाबाद की पूर्व मंजूरी बिना मूल परीक्षार्थी के बदले 'लेखाकार' या 'डमी राइटर' एवं 'दूसरे व्यक्ति' द्वारा लिखी गई परीक्षा की उत्तरवही रद मानी जाएगी । एक से ज्यादा प्रकार के अक्षरों की लिखावट रद मानी जाएगी । काटकूट किए हुए उत्तर मान्य नहीं होंगे । अस्पष्ट और पढ़ा ना जा सके ऐसे उत्तर मान्य नहीं होंगे । अभ्यास क्रम में सामिल पुस्तक की अंतिम संस्करण का ही उपयोग करें । परीक्षा-कक्ष में परीक्षा के दौरान किसी भी परीक्षार्थी को मोबाईल फोन तथा इलेक्ट्रॉनिक साधन जैसे टेब्लेट, लेपटॉप आदि का उपयोग करने तथा उसे अपने पास रखने की अनुमति नहीं है ।

☞ **अगत्य की सूचना : सभी परीक्षार्थी अपनी संस्था की निम्नलिखित website - link पर से पुराने सालों के प्रश्नपत्र और उसके उकेलपत्र नि:शुल्क डाउनलोड कर सकते हैं और उसकी प्रिन्ट भी निकाल सकते हैं ।**

http://www.baps.org/Satsang-Exams.aspx